ब्राम्ही की खेती :

वैज्ञानिक नाम	:	*Bacopa monnieri* (L.) Pennell
प्रचलित नाम	:	ब्राम्ही, जलब्राम्ही
उपयुक्त भाग	:	पंचांग
रासायनिक घटक	:	बैकोसाइड
कुल	:	प्लॅंटाजिनेसी (Plantaginaceae)
संस्कृत नाम	:	ब्राम्ही, सौम्यलता
मराठी नाम	:	ब्राम्ही
अंग्रजी नाम	:	**Indian pennywort, water hyssop, thyme-leaved gratiola**
हिंदी नाम	:	सफेद चमनी, **herb of grace**

पौधे का परिचय :

ब्राम्ही वनस्पती बहूवर्षायू, जमिनपे फैलनेवाली–आर्द्र जलवायू जमिनमे खरपत करके पायी जाती है। ये पौधों पूर्ण रूपेण औषधी होने के कारण इसका संपूर्ण शाक आयुर्वेदीय व अन्य औषधी पद्धतीयों मे इलाज के लिए किया जाता है। तापमान 30-40 डिग्री सेंटीग्रेड और आर्द्रता 65-85 प्रतिशत होन से यह पौधें का विकास अच्छा होता है।

वनस्पति विज्ञान :

ब्राम्ही एक रसीला, चिकना, रेंगने वाला पौधा हैं, जिसमे नोड्स पर सफेद मुलायम जडे होती है। इस पौधे की पत्तियां रसिली तिरछी और 4-6 मिमी मोटी होती है। फूल छोटे, सफेद/निले बैंगनी होते हैं। पत्तियाँ गुदेदार, अवृन्त, तने पर एक–दुसरे के विपरीत अण्डाकार आकार के होती है। फुल पत्तियों और हल्के बैंगनी सफेद फुलों सें आसानी पौधा पहचाना जा सकता हैं। गांठो से शाखाचे निकलकर यह पौधा बढता है । फलो मे छोटे आकार के बीज होते है।

रासायनिक घटक :

ब्राम्ही में मुख्य जैव सक्रिय पदार्थ एल्केलाइड तथा सेपोनिन पाए जाते है। ब्राम्ही में ब्राम्हीन और हरपेस्टिन घटक होते है। सेपोनिन बेकोसाएड 'ए', 'बी' होते है। ब्राम्ही के सुखे पोधो में डी–मॅनीटॉल, हरसॅपोनिन और पोटॅसियम भी पाया जाते है।

मिट्टी :

ब्राम्ही के लिए सैलाबी दलदली मिट्टी होने से पैंदावार अच्छी आती है। पानी पकडनेवाली काली, मध्यम, चिकनी, दोमट जमिन में इसकी खेती कर सकते है। दलदली इलाकी जहरों और अन्य जल स्त्रातो के आसपास में ही इसको उगाया जा सकता है। तेजा बी जादा ऑरगॅनिक कार्बन वाली मिट्टी में उत्पाद अच्छा मिलता है।

जिन क्षेत्र का तापमान 30^{0} सें 40^{0} सेंटीग्रेड और आद्रता 65-80 प्रतिशत होती है। तथा जमिन का pH 5 से 7.5 होता है। ऐसे जमिन में ब्राम्ही खेती करना जरूरी है।

भूमि की तैयारी और रोपण :

भुमि के तैयारी और बेड बनाने के बाद बारीश में याने जुन–जुलै महिने में प्याज जैसे तनों के कटींग 10-12 सें.मी. के करके लाईन में रोपन करे। दो तनों के तुकडो में 10 सें.मी की दुरी रखे। ऐसे करने से जल्दी ही पुरा खेत ब्राम्ही पौधे से फैल जाता है। ब्राम्ही कें रोप बनाके भी खेती कर सकते है। इसमे रोप बनाने का खर्चा बढ जाता है। तनो के छाट या रोप जमीन मे रोपन करते वक्त नीम पेंड, जैविक खाद इस्तेमाल करने से पौधो की बढोतरी या उत्पाद अच्छा होता है।

1 हेक्टेयर पौध रोपण के लिए लगभग 70 किलो ताजा वजन या लगभग 30,000 से 40,000 प्रोपॅगुल (कटींग्स) की आवश्यकता होती है। बरसात के मौंसम में पौधे शानदार वृद्धी दिखाते हैं जब प्रवर्धन तेजी से गुणा करते हैं। बीज बहुत छोटे होते है औंर अक्टूबर/नवंबर के दोरान उत्पादित होते है।

खाद और उर्वरक :

भूमी को खरपतावर मुक्त बनाने के लिए उचित जुताई की जानी चाहिए और एक समान स्तर पर तख्ती लगाई जानी चाहिए। अधिकतम पैदावर के लिए 10 टन/हेक्टेयर अच्छी तरह से सडी हुई गोबर की खाद, निम की पेंड, ट्रायकोड्रमा मिट्टी मिश्रित करे। जिवाणू खाद प्रयोग करने से उत्पाद में बढोतरी होती है।

किस्म :

अधिक उत्पाद मिलने के लिए सेंट्रल इंन्स्टिट्युट ऑफ मेडिसीनल अॅड अॅरोमॅटिक प्लांन्ट्स लखनऊ (सीमॅप) द्वारा सीम–जागृती, प्रयागशक्ती, सुबोधक ये अधिक मात्रा मे बेकोसाईड, रसायन जादा मात्रा मे और जादा उत्पाद देनेवाले किस्म विकसित किए गए है।

बेकोसाईड जादा मात्रा में होने के कारण औषधी कंपनीया इसको पसंती देते है। बेकोसाईड यह किस्मे में 1.8 से 2.0 प्रतिशत पाया जाता है।

सिचांई :

फसल को विकास की पूरी अवधि के दौरान 4-5 सेमी की गहराई पर पानी से भरकर रखना बेहतर होता है। मिट्टी में लगातार नमी बनाए रखने के लिए मिट्टी के प्रकार और पानी की उपलब्धता के आधार पर, साप्ताहिक या अंतराल पर सिंचाई की जाती है। सिंचाई फ्लड या स्प्रिंकलरसे कर सकते है। रोपण के व्यक्त तुंरत सिंचाई की जरूरत होती है। सिंचाई आवश्यकतानुसार करना जरूरी है। कटाई के वक्त सिंचाई बंद रखे।

खरपत नियंत्रण :

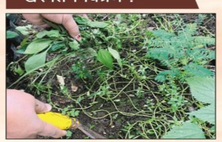

रोपण के पहिले बारिश अगर होती है तो खरपत निकाले और बेडो को ठिक करके रोपण करे। खरपत हाथ सेही निकाले। केमिकल खरपत नाशक का वापर न करे। सुरूवात मे 3-4 बार खरपत निकालने से ब्राम्ही फसल अच्छी आ जाती है।

निराई–गुडाई :

रोपण के बाद 6-10 दिनो मे खरपत निकालकर खेत को पाने दे। खरपत नियंत्रण यही काम सुरूवात के कुछ दिनो मे निराई–गुडाई मे आता है। सिंचाई टाईम पे करना। कटाई ठिक ढंगसे एक साइड से करना जरूरी है। कटाई करने के पहिले खरपत निकाले।

कटाई :

फसल को रोपन के 120-150 दिनों के बाद काटा जाता है। सितंबर–अक्टूबर में पहली कटाई होती है। कटाई करते समय पौधे 20-30 सें. मी के होने जाहिए, जमिन से 5-10 सें.मी तने छोडकर कटाई की जाती है। बेडो मे किसान बैठकर कटाई करते है। कटाई करके करे हुई ब्राम्ही बास्केट मे डालकर जमा करे।

कटाई के बाद प्रबंधन :

कटाई के बाद फ्रेश पत्ते, तने सुबह के धुप में 4-5 दिन सुखा के बाद में अगले 7-10 दिनों के लिए छाव मे सुखाया जाना चाहिए । सुखी सामग्री को साफ कंटेनरो में संग्रहित किया जाना चाहिए । छह महिनों के भंडारण के बाद बैकोसाइड की मात्रा कम होने लगती है । इसलिए लंबे भंडारण से बचना चाहिए । कटाई के बाद बाकी खरपले निकलना जरूरी है। सुखने के बाद सफाई करके भंडारण करे। भंडारण अच्छे हवादार जगह पे बोरो मे भरकर करे।

उपज और आय

ब्राम्ही रोपण के बाद पहिले साल में 2 कटाई होती है। उसके बाद हरसाल 3 कटाई होती है। गिली फ्रेश 15-25 टन उत्पाद आती है। उसमें 3-4 टन सुखी ब्राम्ही पंचाग प्राप्त होता है।

प्रतिकिलो रूपये 60-100 भाव मिलता है। लगभग रूपये 1,80,000 एक एकर, उत्पाद प्राप्त होता है। खर्चा रूपये 80-90 हजार एक एकर के लिए आता है।

फसल कैलेंडर :

प्रमुख गतिविधियाँ	माह	गतिविधियों का विवरण
भूमि की तैयारी	मई– जून	ब्राम्ही को पानी पकडने वाली मिट्टी होनी चाहिए । मिट्टी को ढीलापन आने के लिए अच्छी जुताई करे । जुताई करके मिट्टी मुलायम होने के लिए रोटावेटर का इस्तेमाल करे ।
बेड बनाना	जून	ब्राम्ही को जादा पानी लगने के कारण जमीन के निचली वाले बेड करे (सन्कन बेड)
रोपन	जून– जुलै	10X12 सेमी की दूरी पर 6-8 सेमी के तनो के कटिंग से रोपन करे। तनो को कटिंग करके तुरंत जमिन मे लगाए और सिंचित करे। रोपन के समय पर फ्रेश पौधों के तनो का पत्तें सह वापर करे।
सिंचाई	समय की आवश्यकतानुसार	रोपन के व्यक्त मिट्टी गिली करके भी रोपन कर सकते है। ब्राम्ही को जादा पानी लगने के कारण आवश्यकता नुसार सिंचाई फ्लड या स्प्रिंकलर से करे।
निराई – गुडाई	समय की आवश्यकतानुसार	रोपन के बाद आवश्यकता नुसार खरपत निकलना, खाद डालना, गॅप फिर्लीग करना इत्यादी जरुरी होता है ।
संग्रह/कटाई	सितंबर– अक्टूबर	रोपन के 120-150 दिनो के बाद पहला संग्रह किया जाता है। उसके 3-4 महिने के बाद संग्रह एवं कटाई होती है।
संग्रह के बाद प्रसंस्करण	अक्टूबर और जरूरत अनुसार संग्रह करने के बाद	उत्पाद को चार से पाँच दिनों के लिए साफ क्षेत्र या चादर पर धूप में फैलाकर सुखाया जाना चाहिए, इसके बाद अगले 7-10 दिनों के लिए छाया में सुखाया जाना चाहिए।
भंडारण	विपणन तक	अच्छे हवादार जगह पर सुखने के बाद गनी/जूट/कॉटन कापड के बॅग मे भंडारण करे। काला न पडने के लिए ध्यान दे।

औषधी उपयोग :

१. मानसिक क्षमता बढाने में ये पौंधा उपयुक्त है।
२. बालों के समस्या के निरकरण के लिए फायदेमंद है।
३. इसका उपयोग मूत्र मार्ग के संक्रमण, उच्च रक्तचाप, रक्त के रोग, गठीया और हेपेटाइटिस के उपचार के लिए भी किया जाता है। इसमें एंटीबायोटीक और एंटीफंगल गुण भी होते है। इसके कारण जो घावों को भरने में उपयोगी माने जाते है।
४. ब्राम्ही रक्त संचार मे सुधार करने में लाभकारी है। तनाब के स्तर को कम करता है।
५. प्राकृतिक रूप से प्रतिरक्षा प्रणाली को बढाने में मददगार है। चिन्ता को जड से खत्म करता है।
६. शुगर को नियंत्रित करने में फायदेमंद है।
७. श्वसनविकार में उपयोगी है। श्वसनस्वाथा मे सुधार करता है।
८. ब्राम्ही का उपयोग अन्न पदार्थो में किया जा सकता है । जैसे सलाड, चटणी, सब्जी, ब्राम्ही–घृत इ. में उपयोग किया जाता है ।
९. मिर्गी रोग, काग्नेटिव क्षमता, गढीया व प्रतिरक्षा प्रणाली बढाने मे भी काम करता है ।
१०. आयुर्वेदिक औषधी :– सारस्वत चुर्ण, सारस्वतारीष्ठ, ब्राम्ही घृत, ब्राम्ही कल्प, ब्राम्ही वटी, मेद्यवटी, ब्राम्ही आमला तेल, ब्राम्ही तेल, और मज्जावह संस्था पे काम करने वाले दवाओं में ब्राम्ही का उपयोग किया जाता है । ब्राम्ही स्वास्थ के लिए बहुत ही काम यावी पौधा है।

ब्राम्ही पहचानीए, ब्राम्ही लगाये, ब्राम्ही उपयोग करे, स्वस्थ रहे !!

ब्राम्ही के उत्पादे

ब्राम्ही चूर्ण | ब्राम्ही सिरप | ब्राम्ही सत्व | ब्राम्ही दवाई | ब्राम्ही घृत | ब्राम्ही तेल | ब्राम्ही सब्जी

ब्राम्ही पौधे

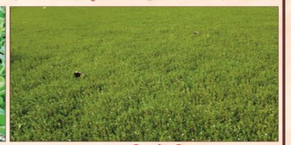

ब्राम्ही खेती

मंडूकपर्णी/कारीवणा (*Centella asiatica* (L.) Urb.)

मंडूकपर्णी (***Centella asiatica* (L.) Urb.**) और ब्राम्ही (***Bacopa monnieri* (L.) Pennell**) ये दो अलग–अलग पौधे है। मंडूकपर्णी कही जगह पे ब्राम्ही करके उपयोग में लायी जाती है।

मार्गदर्शन

प्रा. (डॉ.) तनुजा मनोज नेसरी,
मुख्य कार्यकारी अधिकारी
राष्ट्रीय औषधी वनस्पती मंडळ, नवी दिल्ली

कुलपती,
सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

तांत्रिक सहाय्य

श्री. राकेश भुते, भंडारा, महाराष्ट्र (मो. – 9923601553), सौ. संध्या देवरे
डॉ. स्वप्निल शिंदे

अधिक जानकारी के लिए

संपर्क क्र : + 91-9021086125
ई–मेल : rcfc.wr.sppu@gmail.com
जाल स्थळ : www.rcfcwestern.org

Date :- 30-08-2022

© Prof. (Dr.) Digambar Mokat

Published by - RCFC - WR

औषधीय वनस्पति क्षेत्रीय सह सुविधा केंद्र,
पश्चिमी विभाग (RCFC - WR)
(राष्ट्रीय औषधी पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार)

वनस्पति विज्ञान विभाग
सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

ब्राम्ही की खेती

प्रा. (डॉ.) दिगंबर न. मोकाट
प्रमुख संशोधक तथा क्षेत्रीय संचालक,
क्षेत्रीय सह सुविधा केंद्र– पश्चिमी विभाग,
वनस्पति विज्ञान विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे